कुमार जीवन - 31

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **सदैव हरेक नारी शरीरधारी आत्मा को शक्ति रूप, जगत माता का रूप, देवी का रूप देखना यह है - दिव्य नेत्र से देखना। कुमारी है, माता है, बहन है, सेवाधारी निमित्त शिक्षक है, लेकिन है कौन? शक्ति रूप! बहन-भाई के सम्बन्ध में भी कभी-कभी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है। इसलिए सदा शक्ति रूप हैं। शिव शक्ति हैं। शक्ति के आगे अगर कोई आसुरी वृत्ति से आते तो उनका क्या हाल होता है, वह तो जानते हो ना। हमारी टीचर नहीं - शिव शक्ति है। ईश्वरीय बहन है इससे भी ऊपर शिव शक्ति रूप देखो।** मातायें वा बहनें भी सदा अपने शिव शक्ति स्वरूप में स्थित रहें। मेरा विशेष भाई, विशेष स्टूडेन्ट नहीं।

➳ _ ➳ **वह शिव शक्ति है और आप महावीर हो। लंका को जलाने वाले, पहले स्वयं के अन्दर रावण वंश को जलाना है।** महावीर की विशेषता क्या दिखाते हैं? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? - **"एक राम दूसरा न कोई"**। चित्र देखा है ना। तो हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है, शक्ति भी शिव की है।

➳ _ ➳ **किसी भी देहधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो। बात आत्मा से करनी है वा शरीर से? कार्य व्यवहार में आत्मा कार्य करता है वा शरीर? सदा हर सेकण्ड शरीर में आत्मा को देखो। नज़र ही मस्तक मणी पर जानी चाहिए। तो क्या होगा? आत्मा आत्मा को देखते स्वत: ही आत्म-अभिमानी बन जायेंगे। है तो यह पहला पाठ ना!** पहला पाठ ही पक्का नहीं करेंगे, अल्फ को पक्का नहीं करेंगे तो बे बादशाही कैसे मिलेगी? **(27-4-1983)**

➢➢ दृष्टि को परिवर्तित करने की सहज विधि

➳ _ ➳ बहनों और माताओं को इन 3 स्वरूपों में देखो

→ शक्ति रूप में

→ जगत माता के रूप में

→ देवी के रूप में

- इससे सहज ही आपकी भावनाएं परिवर्तित होने लगेंगी
- बहुत ऊंची दृष्टि है ये

➢➢ स्वयं को महावीर के रूप में समझना

➳ _ ➳ दूसरो का रावण जलाने से पहले

→ स्वयं के रावण को जलाना है

➢➢ आत्म अभिमानी बनने की सहज विधि

➳ _ ➳ स्वयं के मस्तक पर और दूसरों के मस्तक पर आत्मा को देखें

➢➢ यदि हमारे देह की तरफ कोई आकर्षित हो रहा है तो

➳ _ ➳ यह उसकी नहीं, हमारी अपवित्रता है

➢➢ यदि हमारी तरफ किसी के अपवित्र संकल्प उत्पन्न हो रहे हैं तो

➳ _ ➳ कमी हमारे अन्दर है